ISSN:2583-8849



संपादक की कलम से.....

राजस्थानी साहित्य नये आकाश का धरातल

रामअवतार बैरवा

किसी भी देश, क्षेत्र, प्रांत और अंचल का साहित्य वहां की संस्कृति, परम्परा, भौगोलिक स्थिति, भाषा और रहन -सहन पर बहुत अधिक निर्भर करता है। संवेदनाएं, भावनाएं , कल्पनाएं और स्पंदनों की कोई भाषा नहीं होती पर ये सब साहित्य को अलंकृत, ज्ञानात्मक और सर्वहितकारी बनाने में सर्वस्व आहूत करते हैं। आकाशवाणी गणतंत्र दिवस के अवसर पर सर्वभाषा कवि सम्मेलन का आयोजन देश के विभिन्न शहरों में प्रतिवर्ष करता है, जिसमें संविधान में मान्यता प्राप्त सभी 22 भाषाओं के प्रमुख कवि भाग लेते हैं परन्तु जिस भी शहर में इसका आयोजन होता है, उस शहर के निवासियों की अपनी भाषा के कवि के प्रति जो दीवानगी नज़र आती है, उसमें कविता के सारे तत्व स्वत: झलक उठते हैं। तात्पर्य यह भी नहीं कि मैं राजस्थान का निवासी हूं इसलिए ऐसा कह रहा हूं, अपनत्व व्यक्ति के कुल स्नेह की प्रथम सीढ़ी है।

राजस्थानी साहित्य ने भले विश्व क्षितिज पर अपना बहुत अधिक वर्चस्व न कायम किया हो परन्तु यहां के निवासियों ने भारत आने वाले हर तीसरे सेलानी को अपनी संस्कृति और परम्परा के मोहपाश में अवश्य बांधा है। इसी संस्कृति और परम्परा से बेहतरीन लोक साहित्य उपजा है, जो राजस्थान की ही नहीं भारत की भी धरोहर है। राजस्थान का शायद ही ऐसा कोई लोक-कलाकार शेष हो, जिसने विदेशी धरती पर राजस्थानी कला को प्रिय न बनाया हो । घूमर, कालबेलिया और चरी नृत्य ने लोक रचनाकारों को ऐसे अलंकार और शिल्प के विधान दिए हैं कि वो साहित्यिक कल्पनाओं से भी परे हैं। औरतें आज भी यहां घूंघट में रहती हैं। वो अपने जेठ, ससुर या अपने पति से उम्र में बड़े व्यक्तियों से सीधे मुंह बात नहीं कर सकती । घर में यदि कोई दूसरा व्यक्ति न हो और अगर अपने जेठ या ससुर से कुछ कहना हो तो वह अपने गोदी में लिए दो-तीन माह के बच्चे के माध्यम से आवाज लगाती है -'गुड्डू/मुन्ना अपने दादा/बड़े पिताजी से कह दो कि खाना लगा दिया है, खाना खा लीजिए।' बच्चा बोल नहीं सकता पर दादा/जेठ समझ जाता है।

यही स्वर गीतों में दिखाई पड़ते हैं। इनमें पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं के माध्यम से अपने प्रिय को याद किया जाता है -' उड़-उड़ रै म्हारा काला रै कागला, जद म्हारो पियजी घर आवे।' इसका शाब्दिक तात्पर्य यह है कि हे प्रिय कव्वे! अगर तू उड़ जाएगा तो मेरा पति/ मेरा प्रिय घर आ जाएगा। राजस्थान में यह मान्यता है कि कव्वा अगर घर पर आकर बोलता है तो घर पर कोई मेहमान अवश्य आता है। एक पत्नी, जो गांव में रहती है और पति काम-काज के लिए शहर में रहता है, के लिए पति या प्रिय से बड़ा कोई मेहमान नहीं होता। ऐसा ही गीत है- 'चिरमी रा डाला चार वारी जाऊं चिरमी ने।' चिरमी एक भरे-पूरे पेड़ को कहते हैं , जो भरे-पूरे परिवार का प्रतीक है। नव-विवाहिता महिला उस पेड़ को अपना प्रिय मानकर अपने पीहर को याद करते हुए दिल का सारा हाल बयां कर देती है। यहां तीज-त्योहारों से लेकर पूरे संस्कारों, देवी-देवताओं, घर-गृहस्थी, शादी-ब्याह आदि सभी गीतों की अद्भुत दुनिया है। यह विलक्षणता न केवल भारतीय संस्कारों को संरक्षण प्रदान करती है वरन आपसी एकता और भाईचारे को भी बढ़ाती है। साथ ही साथ जीव-जंतुओं और पूरी प्रकृति को बचाए रखने में

बहुत मूल्यवान योग करती है।

इसी परिप्रेक्ष्य में राजस्थानी साहित्य का आकलन किया जाए तो उसने पूरी मानवीयता को आत्मिक बोध की तरफ मोड़ा है। वीर, विरह, सौंदर्य और उत्कर्ष भरे लेखन ने ही राजस्थान के वासियों को आज भी छल और प्रपंच से दूर रखा है। पृथ्वीराज रासो सरीखी कृतियां अन्यत्र कहीं नहीं, न ही मीरां बाई जैसी भक्ति कहीं है। प्रेम का अदृश्य रूप और उस अदृश्य को पा लेने का वाकिया भक्ति साहित्य मे़ ही नहीं पौराणिक साहित्य तक में नहीं मिलता-

'मेरो तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।"

या

'पायो जी मैंने राम रतन धन पायो '

जैसी रचनाएं उस समय की एक महिला लिख रही है और एक ऐसे समय और वंश की महिला लिख रही है, जहां लोक -लाज, परम्पराएं और मर्यादाएं चरम पर थी। महिलाओं का चार-दीवारी से बाहर आने का मतलब उस वंश और शासन के वसूलों को खत्म कर देना था। यही साहित्य जब आगे बढ़कर कन्हैयालाल सेठिया तक आता है तो संवेदनाओं के नये धरातल तय हो जाते हैं ।
महाराणा प्रताप मुगलों से पराधीनता स्वीकार नहीं करते हुए, जब जंगल में रहने लगते हैं और अनाज खत्म होने के बाद घास की रोटी खाने को मजबूर हो जाते हैं और घास की बनी रोटी को भी जब जंगली बिल्ली ले जाती है, उस दृश्य को वीरता और स्वाभिमान के गारे में गूंथकर सेठिया जी कविता के आकाश में शब्दों का सतरंगा इन्द्रधनुष बना देते हैं -

"अरै घास री रोटी ही, जद बन बिलावड़ो ले भाग्यो। नान्हो सो अमरयो चीख पड़यो, राणा रो सोयो दुख जाग्यो।।

राजस्थानी साहित्य किताबों में नहीं हवाओं में तैरता नज़र आता है। बहुत सारे नाम गिनाने पर बहुत से नाम छूट भी सकते हैं। परन्तु राजस्थानी साहित्य के हर पन्ने पर एक इतिहास लिखा है, जो मानवीयता और सांसारिकता को नयी जमीन और पंख देता है। पाठक आकाश की ओर उड़ भी सकता है और नये धरातल भी तलाश कर सकता है ।